" माँ "

इफ्तिखारूल हॅसन
राजस. रुड़की

जनाब डॉ. सर्व श्री अबुल पाकिर ज़ैनूल आबदीन अब्दुल कलाम वैज्ञानिक भूतपूर्व महामहिम राष्ट्रपति जी के चरणों में पुष्प अर्पित करने से पहले आपके बारे में दो शब्द कहने का आग्रह किया गया था। जिस पर मेरे अज़ीज दोस्त ने आप के बारे में एक बात कही थी कि आप ऐसी शख़्सियत थी जिनकी कामयाबी के पीछे किसी नारी का नाम नहीं था मैं अपने अज़ीज़ दोस्त को कविता के माध्यम से बताना चाहता हूँ कि नारी एक शरीर का नाम नहीं है। अपितु नारी एक शक्ति का नाम है। ईश्वर ने अपनी ज्यादातर शक्तियों के नाम नारी के नाम पर ही रखे हैं। सारी नारी शक्तियां जनाब डा. सर्व. अबुल पाकिर जैनूल आबदीन अब्दुल कलाम जी के साथ थी!

मां पास थी
तो ममता साथ थी
लड़खड़ा के चलते थे
तो बाप की अंगुली साथ थी
कुरआन पढ़ते थे
वो तो अल्लाह की रहमत साथ थी।
पेन्न चलाते थे
वो तो इंक साथ थी
फिटा रखते थे
तो पेन्सिल साथ थी
एटम बम पास था
तो मिसाइल साथ थी
देश साथ था
तो सीमा साथ थी।
सूरज निकलता था
तो धूप साथ थी
रात का वक्त था
तो चांदनी साथ थी
अन्धेरी रात थी
तो शबनम साथ थी
संघर्ष करते थे
तो विद्या पास थी
तो मति उनके साथ थी
सिद्धि साथ थी
तो प्रसिद्धि उनके साथ थी
इस महान आत्मा को सलाम करें
इफ्तिकार स्वर्ग में ऊंचे से ऊंचा
मिले स्थान दुआ करे।

मां

ना तीर से डर लगता है।
ना मैं तलवार से डरता हूं
ना मैं तोप से डरता हूं
ना सैलाब से डर लगता है।
ना मे तूफान से डरता हूं
मां न हो जाये नाराज़ मुझसे।
बस इस बात से डरता हूं।